

आई गुर पूर्णिमा प्यारी करियूं दर्शन साईं सुखकारी ॥

अठिसठि तीर्थ पावन जल सां साईं अ थिए अभिषेक

सुन्दर वस्त्र भूषण पहिरे लाजत काम अनेक

सोनी कलंगी सिर पर धारी ॥

सवें सुहागिणियूं कई कुमारियूं आशीश खील वसाईनि

नभ धरणीअ में नौबत बाजे सुर नर सभु गुण गाइनि

जेद्राहुं तेद्राहुं जै जै कारी ॥

अतुर अरिगजा अगर चंदन जी आंगन कीच मची आ

फैलि रही आ सरूप सुन्दर शोभा रेख खिची आ

जै अबल चंद अवतारी ॥

कहिड़ी गायां कीरति तवहां जी मालिक मैगसि चंदा

प्रेमियुनि रसिकनि संत दुलारा श्री सतिगुर सुखकंदा

रस प्रेम भक्ति भण्डारी ॥

कोई छत्रु संवारे साहिब कोई चंवरु झुलावे

कोई आरती उतारे उमंग सां कोई पुष्प वर्षावे

सभु गद् गद् थिया नर नारी ॥

कथा कंतु साईं रसिक शिरोमणि वृंदाबन अनुरागी

श्री मैथिलि चंद्र पाद पद्यमि में नितु जंहिजी मति पागी

सदा रघुवर आज्ञाकारी ॥

समुण्ड जूं लहिरियूं नभ जा तारा बादल बून्दूं ग़णिजनि  
पर सतिगुर साहिब साईं मिठल जा गुनिड़ा ग़णे न सधिजनि  
सभु गाए वज़ाईनि ताड़ी ॥